Indian J. Soc. & Pol. 05(02):77-78:2018 **ISSN: 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 (Till May 2,2018) **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

उत्तर आधुनिकता और कला

अरूण कुमार सिंह[1a]
[a]प्रवक्ता–इतिहास विभाग, डी0ए0वी0 पी0जी0 कालेज, आजमगढ़,उ0प्र0 भारत

ABSTRACT

कला केवल परम्पराओं या रूढ़ियों में बंधकर नही चलती वरन् प्रत्येक काल में उसकी अभिव्यक्ति की सौन्दर्यात्मक, बौद्धिक एवं तकनीकी सीमाएं परिवर्तित होती रहती हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि प्रागैतिहासिक काल, अजन्ता राजपूत, मुगल, पहाड़ी सभी शैलियों एवं आधुनिक काल में कलाकारों ने अपनी कलात्मक प्रतिभा का अपने सामर्थ्य एवं कला के सापेक्ष अपनी सृजनात्मकता, मौलिकता का परिचय दिया है। भारत में 20वीं शताब्दी का समय इस दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण रहा कि उसमें एक से बढ़कर एक परिवर्तनकारी कार्य सम्भव हुए। इस शताब्दी की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह भी रही कि इमसें राजनीति से लेकर साहित्य, दर्शन, धर्म, सामाजिक विमर्श सहित कला में भी प्रयोगधर्मी कार्य इसी सदी की देन है। मिथक पात्रों की रचना से लेकर पुनरूत्थानवादी अवधारणाओं की अभिव्यक्ति का प्रश्न हो या फ़िर तात्कालिक यथार्थ को दर्शाने का यह समय इस बात को लेकर हमेशा उल्लेखनीय रहेगा, जिसकी बात किये बिना भारतीय कला के उत्तर आधुनिक स्वरूप को समझना असम्भव है।

KEY WORDS: *प्रागैतिहासिक काल, आधुनिकता, सौन्दर्य भाव, कला*

कला के क्षेत्र में उत्तर आधुनिकता की कोई 1980 के दशक के आस–पास शुरू होता है, जबकि विवानसुन्दरम् व नलिनी मलानी सरीखे कलाकारों ने चित्रतल (कैनवास कागज आदि) के महत्व को समाप्त करते हुए अभिव्यक्ति के गैर परम्परागत एवं एकदम नये साधनों की खोज करते हुए संस्थापन, कौलाज जैसे नवीन कलारूपों का सृजन प्रारम्भ किया था। परिणामस्वरूप अभिव्यक्ति के विविध माध्यमों तथा मूर्तिकला, वास्तुकला, रंग मंच, सिनेमा, साहित्य चित्रकला, संगीत आदि कलारूपों के मध्य सीमा रेखाएं टूटने लगी। सघन व परिमाण भारी अभिव्यक्ति के उद्देश्य से विविध कलारूपों अथवा माध्यमों ने पारस्परिक प्रभाव ग्रहण की सम्भावनाएं बढ़ी तथा गैर कलात्मक क्षेत्रों व तत्वों से भी प्रभाव ग्रहण करने की स्वतंत्रता मिली। इसी प्रकार से भारतीय कला क्रमशः नवीन खोजों व प्रयोगों व परम्परा निषेध के बूते पर नयी स्थापनाओं की ओर अग्रसर हुई। डा. ज्योतिष जोशी ने बताया है कि ''भारत देश की कला पद्धतियों पर नजर दौड़ाएं तो आश्चर्य होता कि कैलेण्डर आर्ट से लेकर भाववाद, स्वच्छन्दतावाद, यथार्थवादी, प्रगतिवाद जैसी विचारात्मक कला वृत्तियों के साथ–साथ भारत में पारम्परिक कला रूपों में नाना तरह के प्रयोग होते रहे हैं। इन प्रयोगों में कला आधुनिक हुई और अपनी गति के साथ–साथ समकालीन जीवनधारा में शामिल होकर अपने को प्रमाणित कर रही है।''(समकालीन कला,2008,पृ07)

''उत्तर आधुनिक कला के दौर में राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय चित्रकारों की सक्रियता का अंत नहीं है। ये कलाकार एक से बढ़कर एक कृतियों का सृजन कर सुधिजनों की सुरूचियों को जगा रहे हैं।''(देशबन्धु 8नवम्बर 2009) हम कुछ समकालीन भारतीय कलाकारों एवं उनकी कला की चर्चा करेंगे। जिन्होंने कला की भाषा और उसके व्याकरण में निर्णायक व महत्वपूर्ण परिवर्तन करते हुए अति आधुनिक परिवेश के सापेक्ष अपने कला रूप गढ़े हैं। ये सभी कलाकार भारत के विभिन्न प्रांतों से जुड़े हैं। ये कलाकार अपने माध्यमों व विविध सामग्री को लेकर जोखिम उठाने को तत्पर रहते हैं– ''यानि अब परम्परागत कैनवास या मूर्ति शिल्प अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं माना जाता। ऐसे लगभग 'कला विरोधी' महौल में अपनी कला अभिव्यक्ति की अलग पहचान बनाना आसान काम नहीं है, पर विवान सुन्दरम्, सुबोध गुप्ता, जगन्नाथ पण्डा, चिंतन उपाध्याय, सुरेन्द्रन नायर, लक्ष्मण ऐले, प्रतुल दास, नलिनी मालानी, शिबा छजी, शिल्पा गुप्ता, अद्वैतचरण गडनायक, वाल्सन के0 कोलेरी, प्रवीर गुप्ता, शकुंतला कुलकर्णी, वी.वी. सुरेश, नवजोत, अलताफ, नटराज शर्मा, किरण सुबैया, इरन्ना आदि कलाकारों ने अलग अलग माध्यमों में उल्लेखनीय कार्य किया है।''(समकालीन कला पृ025)

''कहते हैं यह दौर संस्थापन कला का है।'' संस्थापन कला माने 'इंस्टोलेशन आर्ट'। पश्चिम में ही नहीं बल्कि भारत में भी इस तरफ और हर छोर, हर कलाकार के मन में रूझान साफ दिखायी देने लगा है। यह एक ऐसी भाषा है जो कैनवास के बंधन से मुक्त है। इस कल्चर के निर्धारित आकार का बंधन नहीं है। यहां ध्वनि है, रंग है, डिजीटल इमेज है और इन सबमें दृश्यों को विशेष ढंग से रूपित करने की कला की नयी खोज भी है।''(डेली न्यूज 17 दिम्बर 2009)

सुबोध गुप्ता : इन्होंने मध्यम वर्गीय समृद्धि के प्रतीक स्टील के बर्तनों को एक खास ढंग से संयोजित करके अंतर्राष्ट्रीय

1: Corresponding Author

प्रेक्षकों को भी सोचने और देखने के ढंग को बदलने के लिए मजबूर कर दिया। सुबोध गुप्ता ने मध्यमवर्गीय जीवन की साधारण बाल्टी को एक बड़े मूर्तिशिल्प में बदलकर और उससे कुछ दूरी पर भारतीय अम्बेसडर टैक्सी का ऊपरी हिस्सा लेकर कैरियर पर बंधे हुए समान की अद्भुत कल्पना की थी। सुबोध गुप्ता जिन्हें भारत का डेमियस हर्ब्स कहा जा रहा है इन्होंने कुछ समय पहले पेरिस के एक चर्च में एक विशाल खोपड़ी प्रदर्शित की थी जो हीरों से नहीं बल्कि स्टील के बर्तनों से बनी थी इन्होंने स्टील के बर्तनों के सहारे कई अनोखे इंस्टोलेशन बनाये हैं। पश्चिम के आर्ट कलेक्टर इन स्टील के बर्तनों और उनकी कलाकृतियों का मुंहमांगा दाम देने को तैयार हैं।

चिंतन उपाध्याय : ये अपने राजस्थान की परम्परा को बहुत दिलचस्प और लगभग भविष्यवादी इस्तेमाल किया है। इन्होंने सपाट चमकते रंगों की पृष्ठभूमि में मनुष्य के शरीर को अनेकों मुद्राओं में परम्परागत राजस्थानी रंग रूपाकारों का रचनात्मक इस्तेमाल किया है। डिजाइनर बेबी की उनकी कल्पना अद्भुत है। उन्होंने अपनी बात केवल पेंटिंग के माध्यम से ही नहीं की बल्कि बड़ोदरा के एक कला शिविर में अपने कार्यक्रम बार–बार हर बार कितनी बार ? से प्रेषकों को लगभग चौंका दिया। इनके इस कार्यक्रम में बॉडी आर्ट परफारमेंस, इंस्टोलेशन, रेखांकन आदि सब मौजूद थे।

जगन्नाथ पण्डा : जगन्नाथ पण्डा की पहचान एक अत्यन्त संवेदनशील थिंकिंग आर्टिस्ट के रूप में हो रही है। इन्होंने अपने चित्रों में अपने समय की समस्याओं की राजनीति पहचानने के लिए अपनी एक मौलिक चित्रभाषा विकसित की है। इन्हें उड़ीसा में आयी प्राकृतिक आपदा में खाद्य पदार्थों को लेकर राजनीति तो कभी आधुनिक शहरों में पानी को लेकर राजनीति, इन्हें विचलित कर देती है। इनकी कला अपनी अद्भुत कल्पना शक्ति और देखने के नजरिये के कारण दर्शकों को प्रभावित करती है। अति आधुनिक समस्याएँ और क्रूरताएँ उन्हें चित्रों की एक प्रारम्भिक आधार देती है, पर वह बड़े कलाकार अपने देखने के नजरियों के कारण हैं। इसलिए वे सजग और थिंकिंग आर्टिस्ट हैं।

सुरेन्द्रन नायर : सुरेन्द्र नायर एक इन्वेन्टिव चित्रकार के रूप में उभर कर सामने आये हैं। वे अपने चित्रों के माध्यम से बराबर नयी चुनौतियां प्रस्तुत कर रहे हैं और वे कल्पना के नित नये जोखिम उठाते हैं। पिछले दिनों रविन्द्र भवन (ललित कला एकेडमी) में सुरेन्द्रन नायर की एक बहुत अच्छी प्रदर्शनी में बहुत पेंटिंग में एक गेंदबाज बहुत जोर से अपील कर रहा है। बात क्रिकेट का खेल नहीं था इस खेल के नाटकीय और काव्यात्मक गुणों का पेंटिंग में प्रभावशाली इस्तेमाल किया गया था। इन्होंने एक तेज गेंदबाज को भागते उसके अपील करने के क्षण को पकड़ा। उनके नजरिये में इस क्षण को पेंट क्यों नहीं किया जा सकता।

प्रतुल दासा : उभरते हुए युवा कलाकारों में प्रतुल दासा का काम उल्लेखनीय है। वह हाथ में ब्रश लेकर तेजी से काम करने वाले कलाकार नहीं हैं। इनके काम करने का माध्यम वीडियो इंस्टोलेशन, प्रोजेक्ट आर्ट, वीडियो फिल्म आदि हैं, जिसमें इनकी गहरी दिलचस्पी है। भारतीय कलाकारों में विवान सुन्दरम् के काम से वे काफी प्रभावित हैं क्योंकि विवान उन्हें समय की जरूरत के हिसाब से रचना सामग्री के इस्तेमाल और कला के अंतर्निहित विचारों के लिए प्रभावित करते हैं। प्रतुल दास ने एक वीडियो फिल्म एक रविवार में अपने कस्बे के यथार्थ को नये ढंग से देखा जिसमें एक पुजारी अपने घर के सामने वाले मंदिर में सुबह से शंख बजाना शुरू कर देता था। कस्बे में एक कसाईवाड़ा भी था। राजनीतिक कारणों से उसे कसाईबाड़े को शहर से बाहर जगह दे दी गयी। खुद पाखण्डी राजनीतिक कार्यकर्ताओं की वजह से उसे बाहर की जगह दे दी गयी थी। प्रतुल दास ने अपने वीडियो में किसी एक रविवार की कल्पना की जहां दो व्यक्ति शंख बजा रहे हैं और उसके पीछे की पृष्ठभूमि में कसाई मांस काट रहे हैं। दोनों दुनिया एक अतियथार्थवाद को दर्शाती है। प्रतुल सिनेमा माध्यम को चित्रकार के माध्यम का विस्तार मानते हैं।

हाल ही में विनोद भारद्वाज जी ने समकालीन पत्रिका में लिखा है कि जिस तरह से कोलाज तकनीकी ने तैल रंगों की जगह ले ली है। उसी तरह से कैथोड रे ट्यूब कैनवास की जगह ले लेगी। भारत में अनेक कलाकार कैनवास के प्रति आज भी प्रेम और श्रद्धा का भाव रखते हैं लेकिन पश्चिम में वीडियो आर्ट एक शक्तिशाली कला आन्दोलन का रूप ले चुका है। भारत में भी कई नये व पुराने कलाकारों ने वीडियो आर्ट में उल्लेखनीय कार्य किया है। इनमें खासतौर पर नलिनी मलानी ने इस माध्यम का अच्छा इस्तेमाल किया है। क्यूरेटर माइकल न्यूरद्सनी वीडियो को सिनेमा नहीं मानते हैं। दोनों में सिर्फ सतही सम्बन्ध है। उनका कहना है कि वीडियो आर्ट समकालीन समय में कला का एक मुख्य रूप ले चुकी है। ठीक वैसे ही जैसे 1970 के दशक में फोटोग्राफी ने कला का मुख्य रूप लिया था। वीडियो आर्ट के माध्यम से परिहासपूर्ण संक्षिप्त, काव्यात्मक और पुरोधा आविष्कारों को प्रस्तुत किया जा सकता है।

सन्दर्भ :

समकालीन कला, अंक 35, मार्च–जून 2008,

प्रदीप,डॉ0 किरण, *आकृति,*

देशबन्धु दैनिक, रविवार, 8 नवम्बर, 2009

डेली न्यूज में प्रकाशित डॉ. राजेश कुमार व्यास का स्तम्भ 'कला तट', 17–12–2009